ज़ीका वायरस वैश्विक संकट घोषित

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ज़ीका वायरस को वैश्विक संकट घोषित कर दिया है। पिछले दिनों इस वायरस की वजह से होने वाली जन्मजात विकृतियों की बात सामने आई थी। वैश्विक संकट घोषित होने के साथ ही इस वायरस को रोकने तथा इस पर अनुसंधान को प्राथमिकता मिलने की उम्मीद है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की महानिदेशक मार्गरेट चान ने कहा है कि ज़ीका वायरस को लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समन्वित प्रयासों की ज़रूरत है हालांकि उन्होंने अभी लोगों की आवाजाही और व्यापार पर प्रतिबंध की ज़रूरत से इन्कार किया है।

ज़ीका वायरस को वैश्विक संकट घोषित करने की सिफारिश राष्ट्र संघ की एक स्वतंत्र विशेषज्ञ समिति ने की थी। दरअसल, पिछले दिनों एबोला वायरस के बारे में समय रहते प्रत्युत्तर न दे पाने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन को काफी आलोचना का शिकार होना पड़ा था। लिहाज़ा संगठन ने ज़ीका वायरस के मामले में त्वरित कार्रवाई की कोशिश की है।

पिछले सप्ताह संगठन ने पाया कि ज़ीका वायरस बहुत तेज़ी से फैल रहा है और अमरीकी इलाके में यह 40 लाख लोगों को संक्रमित कर सकता है। वैसे तो इस वायरस के लक्षणों में सामान्य बुखार, बदन दर्द और चमड़ी पर फुंसियां ही हैं मगर ब्राज़ील में ऐसे 4000 मामले रिपोर्ट किए गए हैं जिनमें आशंका है कि ज़ीका वायरस की वजह से बच्चे सामान्य से छोटे दिमाग के साथ पैदा हुए हैं। इस स्थिति को माइक्रोसेफेली कहते हैं। वैसे अभी यह पक्के तौर पर कहा नहीं जा सकता कि ब्राज़ील के बच्चों में माइक्रोसेफेली की समस्या ज़ीका वायरस की वजह से ही हुई है मगर परिस्थितियां इसी ओर इशारा कर रही हैं।

ब्राज़ील के स्वास्थ्य मंत्री के मुताबिक ज़ीका वायरस इसलिए भी अधिक खतरनाक है क्योंकि 80 प्रतिशत संक्रमित व्यक्तियों में बीमारी के कोई लक्षण नज़र नहीं आते। अर्थात ये व्यक्ति वायरस को फैलाते रहेंगे। दूसरी समस्या यह भी होगी कि यदि ऐसे लक्षण-रहित व्यक्ति गर्भवती स्त्रियां हैं तो उनके बच्चों में माइक्रोसेफेली का खतरा बना रहेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***